International Journal of Social Science Research (IJSSR)
Volume- 2, Issue- 4 | July - August 2025 ISSN: 3048-9490

महादेवी वर्मा के कथा साहित्य में निम्नवर्ग

डॉ० प्रमोद कुमार सहनी

सारांश

महादेवी वर्मा के कथा साहित्य में निम्नवर्गीय जीवन की यथार्थपूर्ण और संवेदनशील प्रस्तुति दिखाई देती है। उनके रेखाचित्रों में यह वर्ग आर्थिक अभाव, शोषण, और सामाजिक अपमान से ग्रस्त दिखाया गया है, फिर भी उसका जीवन सरल, सच्चा और मानवीय गुणों से भरपूर है। सबिया, घीसा, अलोपी जैसे पात्रों के माध्यम से लेखिका ने निम्नवर्ग की गरीबी, संघर्ष, आत्मसम्मान, और निरीहता को प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है। उन्होंने उच्च वर्ग के ढोंग और अन्यायपूर्ण व्यवस्था पर भी तीखा प्रहार किया है। महादेवी वर्मा ने इन पात्रों के माध्यम से निम्नवर्ग के प्रति अपनी करुणा, संवेदना और सामाजिक न्याय की पक्षधरता स्पष्ट की है।

मुख्य शब्दः निम्नवर्ग, संवेदनशीलता, रेखाचित्र, शोषण, सरलता व सच्चाई।

मूल आलेख

निम्नवर्ग में वे लोग होते है, जिनके पास श्रम को छोड़कर उत्पादन और जीवन– जीवकोपार्जन का कोई साधन नहीं होता। यह वर्ग है जो श्रम करता है, पसीना बहाता है और अपने श्रम की मजदूरी पाकर उससे जीविका चलाता है। हिंदी साहित्य कोश में निम्नवर्ग के संबंध में लिखा है, "यह समाज का वह भाग है, जो अपनी जीविका का उपार्जन श्रम से करता है और अधिकतर इस वर्ग का ही शोषण किया जाता है। इस वर्ग के अंतर्गत किसान, मजदूर आते है।" निम्नवर्ग वर्तमान समाज में जीने के लिए रोजी–रोटी की समस्या हल करनें में ही लगा रहता है। यह वर्ग अपने अधिकार के प्रति बिल्कुल ही सजग नहीं है।

निम्नवर्ग धन के अभाव के कारण शिक्षा नहीं ले पाता और साधारण सुविधाओ से वंचित रह जाता है। उन्हें अपने अधिकार को पहचानने का ज्ञान भी उसमें नहीं होता। वर्तमान समय में निम्नवर्गीय लोगों में डॉ. मोहिनी शर्मा अर्थ चेतना पाती है। वे लिखती है, "समाज के निम्नवर्ग में स्वतंत्रता पूर्व तक तो अर्थचेतना दिखाई नहीं देती थी। किंतु यह वर्ग भी अर्थाकांक्षी बनने लगा है। इसके सामने मध्यवर्ग और उच्च वर्ग है, जिनकी स्थिति को प्राप्त करना इसका लक्ष्य है।" लेकिन इस स्थिति को प्राप्त करने के सामर्थ्य का निम्नवर्ग में अभाव है। इस वर्ग में आर्थिक चेतना जगी है, फिर भी आर्थिक दौड़ में यह वर्ग प्रतिभागी नहीं दिखाई देता। रोजी–रोटी कमाने की समस्या से मुक्ति पाने में ही यह वर्ग जीवनभर उलझा हुआ होता है।

हमारे देश में निम्नवर्ग सदियों से अभाव और अभियोगों से जूझ रहा है। एक ओर यदि वह सामाजिक ढाँचे के बोझ से दब रहा है तो दूसरी ओर उच्च वर्ग ने आंतक फैलाकर लगातार इसके खून चूसा है। गरीबी की मार से पीड़ित ये कृषक–मजदूर, कुली–बुनिहार आदि सभी ओर से शोषण के शिकार रहे हैं। ये लोग जी तोड़ मेहनत करने पर भी दो वक्त भोजन भी नहीं जुटा पाते। इनकी आर्थिक हालत ऐसी होती है जिन्हें पहननें के लिए दो जोड़ी कपड़े नही, दवाई के लिए चार पैसे नही रहने को झोपड़ी–फुटपाथ होते है।

हमारे देश में अधिकांश लोग ऐसे निम्नवर्ग में आते है जो शोषित, पीड़ित, नंग–धुडंग रहते है, आधा पेट अथवा भूखे रहते है। पूंजीपति और शासक द्वारा दोनो ओर से पीसे जाते है, सहते है, सहना ही उनकी

जिंदगी की नियति बन जाती है। इतने कमी होने के बावजूद भी मानवीयता, उदारता और अपनापन इन लोगों में अधिक मिलता है।

महादेवी वर्मा के विवेच्य कथा साहित्यों में देखने को मिलता है कि निम्नवर्ग पहले से उच्चवर्ग के टुकड़ो पर पला है। निम्नवर्ग, उच्च वर्ग के लोगो का जूठा या बचा–खुचा खाया करता था और फटा–पुराना कपड़ा पहनता था। अतीत के चलचित्र के "सबिया" पर जब बच्चो को सँभालने की जिम्मेदारी आती है। तब वह महादेवी वर्मा के घर में नौकरानी बनकर रहती है। दिनभर काम करने के बाद कुछ खाना बच्चो के लिए अपने घर ले जाती है। महादेवी लिखती है, "साँझ–सवेरे बच्चों से लदी–फँदी सबिया को बड़ी कठिनाई से थाली ले जाते देखकर मैंने उसे वहीं बच्चों को खिलाकर खा लेने की बता सुझायी। उसने इस तरह सकुचाकर उत्तर दिया, मानो बड़े अक्षम्य अपराध की स्वीकारोक्ति हो। कहा, "बचिया के आँधर–धूधर आजी है मलकिन! ओहका बिन खियाये–पियाये कसत खाब।" सबिया को बच्चों के साथ अन्धी माँ को भी देखना पड़ता है। किसी भी हालत में वह उन्हे भूखा नही रखना चाहती।

महादेवी के रेखाचित्रों के अध्ययन से पता चलता है कि निम्नवर्ग पहले से ही शिक्षा के क्षेत्र में काफी पीछे है। इसलिए यह बौद्विक क्षेत्र में भी आगे बढ़ने से रहा। 'घीसा' रेखाचित्र द्वारा महादेवी वर्मा ने निम्नवर्ग की गरीबी पर प्रकाश डाला है। लेखिका ने गंगा पार झूँसी गाँव में बच्चों को पढ़ाने के लिए स्कूल खोला था। लेकिन वहाँ के बच्चों के पास न कपड़े है न बसता। लेखिका महादेवी वर्मा उस गाँव में हर माह में चार दिन ही जाती थी। एक दिन महादेवी वर्मा ने सभी बच्चों को नहा धोकर साफ कपड़े पहनकर आने के लिए कहा था। घीसा के अलावे सभी बच्चें आये। महादेवी लिखती है, "किसी दयावती का दिया हुए एक पुराना कुरता, जिसकी एक आस्तीन आधी थी, और एक अंगोछा जैसा फटा टुकड़ा। जब घीसा नहाकर भीगा अँगोछा लपेटे और आधा भीगा कुरता पहने अपराधी के समान मेरे सामने खड़ा हुआ, तब आँखे ही नहीं मेरा रोम गीला हो गया।" निम्नवर्ग के बच्चो को तन ढँकने के लिए फटे पुराने कपड़ो के लिए भी किसी के सामने हाथ फैलाना पड़ता है। दुकानदार भी ऐसे वर्ग उधार नहीं देते। जिसके कारण उनकी समस्याएँ और भी बद से बदतर होती चली जाती है।

यह समाज की विडम्बना रही है कि निम्नवर्ग अपनी प्रगति हेतु संघर्षरत हुआ था लेकिन समाज के किसी अन्य वर्ग द्वारा उसका कभी सहयोग नहीं किया गया। निम्नवर्ग के लोग भी समाज में इज्जत के साथ जीना चाहता है लेकिन उच्च वर्ग के लिए उसे जगह–जगह पर अपमानित करते हैं। उसका जीना हराम कर देते है। "सबिया महादेवी के रेखाचित्र में सबिया एक ऐसा पात्र है जो समाज में इज्जत के साथ जीना चाहती है, पर ऐसा हो नहीं पाता। एक दिन सबिया के घर के पास एक बँगले में चोरी हो गई। चोरी के लिए सबिया के पति मैकू पर इल्जाम लगाया गया। गरीब होने के कारण उनपर ही चोरी का आरोप लगाया जाता है। सबिया इस बात को लेकन चिंतित रहती है। महादेवी वर्मा लिखती है, "अपने पकड़े जाने की संभावना के मृतप्राय सबिया जब मेरे सामने, अब हमारी पति न बची मलकिन" कह कर चुपचाप आँसू बरसने लगी, तब उसकी व्यथा ने मेरे ह्रदय को एक विचित्र रूप से स्पर्श किया।" महादेवी वर्मा जी के प्रयत्नो से सबिया पुलिस के अत्याचार के बच गई। संदेह मात्र में पुलिस द्वारा सबिया और उसके पति की लज्जा को तार–तार करने का प्रयास किया।

निम्नवर्ग के गरीब, दीन–हीन लोगो में कोई चीज ऐसी नहीं होती जिसे वह दूसरों से छिपाना चाहता हो। उनका जीवन सरल, सादा और सच्चा होता है वे अपने जीवन की कहानी को निःसंकोच होकर दूसरों को बता देते हैं। अंधा अलोपी रेखाचित्र द्वारा महादेवी ने उच्च एवं निम्नवर्ग के जीवन और व्यक्तित्व की तुलना की है। अलोपी एक ऐसे अंधे, परिश्रमी, ममतामय एवं मानवीय सौहार्द्र संपन्न ईमानदार युवक है, जिसने लेखिका के मन पर अपने व्यक्तित्व की गहरी छाप उभार दी है। वह काछी जाति का है। पिता की मृत्यु के बाद बूढ़ी माँ तरकारियाँ बेचकर अपना जीवन–यापन करती है। अलोपी को यह बात बिल्कुल

ही अच्छी नहीं लगती कि जवान आदमी बैठा रहे और उसकी बूढ़ी माँ कमाएँ। इसलिए वह रग्घू के साथ लेकर महादेवी वर्मा के छात्रावास में तरकारी पहुँचाने लगा। जहाँ नेत्रहीन स्वयं को सूरदास और विकलांग कहनेवाले व्यक्ति भीख मांगकर पेट भरना अपना जन्मसिद्व अधिकार मानते है और समाज पर बोझ बने रहते है वहा अलोपी ने अपने पुरूषार्थ एवं परिश्रमशीलता पर विश्वास कर के रोजगार करके जीवन व्यतीत करने का निर्णय लिया।

महादेवी वर्मा लिखती है, "इस वर्ग का जीवन खुली पुस्तक जैसा रहता है, अतः महान ही नहीं, तुच्छतम आवश्यकता के अवसर पर भी उसकी कथा आदि से अंत तक सुना देना सहज हो जाता है। इसके विपरीत हमारा जटिल से जटिलतम होता हुआ अन्तर्जगत और कृत्रिम बनता हुआ जीवन ऐसी स्थिति उत्पन्न किय बिना नही रहता, जिसमें बाहर के बगुलेपन को भीतर की सड़ी–गली मछलियों से सफेदी मिलने लगती है। इस से हमारी तारतम्यही कथा अधिकाधिक कथनीय बनती जाती है। हम सहज – भाव से अपनी उलझी कहानी कह नहीं सकते, अतः जब कहने बैठते है, तब कल्पना का एक–एक तार सत्य की अनेक झंकारों की भ्रांति उत्पन्न करके उसे और अधिक उलझाने लगते है।" महोदवी वर्मा ने निम्नवर्गीय लोगों की सरलता तथा तथाकथित उच्च वर्ग के लोगो के ढ़ोंगी बनवाटी, छल–कपट पूर्ण आचरण एवं व्यवहार की तुलना कर आज के सभ्य समाज को पोल खोलने का बेहतर कार्य किया है।

हमारा समाज इतना विकृत और जटिल हो गया है कि अपराधी को दण्ड देने के बजाय दूसरों को दण्ड देना न्याय संगत समझा जाने लगा है। बड़े लोग तरह–तरह के उपायों से दूसरो के धन को हड़प लेते है, परंतु उन्हे कोई चोर नही कहता, लेकिन यदि कोई गरीब किसी की चीज चुरा लेता है तो पूरा समाज एक स्वर में उसे चोर घोषित कर दण्ड देने के लिए आतुल हो उठता है। बिना दूसरों का धन चुराएँ अमीर बनना कठिन कार्य है। इसी कारण जब महादेवी वर्मा से एक परिचित वकील पत्नी ने कहा था कि "आप चोरों की औरतों को क्यों नौकर रख लेती है ? तो महादेवी ने उत्तर दिया, "यदि दूसरो के धन को किसी–न–किसी प्रकार अपना लेने का नाम चोरी है, तो मैं जानती हूँ कि हम में से कौन संपन्न महिला चोर पत्नी नहीं कही जा सकती ?" महादेवी वर्मा के इस कथन से हमारी वर्तमान समाजिक व्यवस्था पर गहरी चोट हुई है। आज के युग में धनिक व्यक्ति और अधिक धनवान बनना चाहता है। गरीबों का कोई सहायक नहीं होता। इसलिए संपन्न समाज और उसके मुरगे–पुलिस, अदालत, गुंडे सभी के द्वारा गरीब को सताया जाता है। हमारे वर्तमान समाज का विश्वास और न्याय जो संपन्न लोगो के हाथ का कठपुतला बना रहता है।

निष्कर्ष

आर्थिक विषमता के कारण समाज में दरारे बढ़ गई है। धन की प्रधानता के कारण ही समाज में व्यक्ति का स्थान निश्चित हो रहा है। अर्थ के कारण ही समाज में वर्गो का निर्माण हुआ दिखाई देता है। उच्च वर्ग निम्नवर्ग का शोषण करता है। समाज में संघर्ष हो रहा है।

महादेवी वर्मा ने अपने रेखाचित्रों में उच्च वर्ग एवं निम्नवर्ग का चित्रण किया है। उच्चवर्गो द्वारा हमेशा निम्नवर्ग को यातनाएँ दी गई है। निम्नवर्ग उच्चवर्ग के नौकर–चाकर रहे है। सबिया, मैकू, गेंदा आदि समाज में सम्मान के साथ रहना चाहते है लेकिन उनपर चोरी का झूठा इल्जाम लगाया जाता है। ठाकुर गोपाल शरण सिंह जैसे लोग भी निम्नवर्ग के लोगो की शिक्षा के आड़े आने से बाज नही आते है। निम्नवर्ग हमेशा अभावों का जीवन जीता दिखाई देता हैं। सबिया अपने परिवार के सदस्यों की भूख अमीर लोगो के दिए हुए टुकड़ो से मिटाती है। घीसा का तन भी अमीर के दिये कुर्ते से ढ़का हुआ है। लेकिन निम्नवर्ग का जीवन सादा, सरल, सच्चा होता है। उनमें किसी भी प्रकार का छल–कपट नही होता। महादेवी वर्मा में निम्नवर्ग के प्रति संवेदनशीलता दिखाई देती है।

सदंर्भ ग्रंथ –

1 डॉ. अग्रवाल सुरेश – हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि –, अशोक प्रकाशन, दिल्ली सं० 1998
2 आजकल, मार्च 2007
3 वर्मा महादेवी – श्रृंखला की कड़ियाँ – लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं० 2004
4 मानव विश्वंभर – हिन्दी साहित्य का सर्वेक्षण, सं, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं० 1977
5 तिवारी रामचन्द्र – हिन्दी का गद्य साहित्य, सं., विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पुनमुर्द्रण, 1999
6 वर्मा महादेवी – अतीत के चलचित्र – लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2000
7 वर्मा महादेवी – स्मृति की रेखाएँ – लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1991
8 माधुरी छेड़ा – स्त्री जीवन दर्शन – माहेश्वरी प्रकाशन, दिल्ली, 1985